भगतसिंह के जन्मदिवस (27 सितम्बर) के अवसर पर 'दिशा' द्वारा विविध कार्यक्रमों का आयोजन

सर्दियां तुम्हारी वसन्त हमारा

दिल्ली। भगतसिंह को याद करने के रस्मी कवायदों और छात्रों-नौजवानों के प्रतीक इस नाम के वास्तविक अर्थ को ढांपने व उनके विचारों पर पर्दा डालने की साजिशों के समान्तर **'दिशा छात्र संगठन'** को विभिन्न इकाइयों ने विविध कार्यक्रमों के माध्यम से शहीदे आज़म के अधूरे सपने को पूरा करने का संकल्प बांधा।

'दिशा छात्र संगठन' की **दिल्ली** इकाई ने इस अवसर पर **'शहीदे आज़म विचार-यात्रा'** का आयोजन किया। भगतसिंह के 95 वें जन्मदिवस पर 27 सितम्बर को सुबह 10 बजे **दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर** में पटेल चेस्ट चौराहे से लगभग पचास कार्यकर्ताओं की टोली ने साइकिल मार्च निकाला। यह विचार यात्रा विश्वविद्यालय परिसर के सभी कालेजों, संकायों तथा आसपास के रिहायशी इलाकों में छोटी-छोटी सभाएं करते हुए दिन में 2 बजे **रामजस कालेज** के पास क्रांति चौक पर समाप्त हुआ।

विभिन्न सभाओं के माध्यम से वक्ताओं ने कहा कि आज जब एक अधूरी, खण्डित आज़ादी के रूप में साम्राज्यवाद से सांठगांठ किये हुए देशी पूंजीवाद के जालिम शासन के जुअे को ढोते-ढोते आधी सदी से ज्यादा का समय बीत चुका है, आज जबकि 'इस' आज़ादी का वास्तविक रूप भूमण्डलीकरण की आर्थिक नीतियों के दौर में खुलकर सामने आ चुका है, तो इस अंधेरे के खिलाफ निर्णायक संघर्ष के लिए 'उस' आज़ादी को याद करना बेहद ज़रूरी है जिसका भगतसिंह ने न सिर्फ सपना देखा था बल्कि उसका एक नक्शा भी सामने रखा था और उसे हासिल करने के रास्ते की भी एक रूपरेखा प्रस्तुत की थी।

'दिशा' के कार्यकर्ता भगतसिंह के चित्र लगी हुई टोपियां पहने थे तथा साइकिलों पर नौजवानों को ललकारने वाले नारों की तख्तियां लगी थीं। वे **'भगतसिंह को याद करो! नई क्रान्ति की राह चलो!'**, **'भगतसिंह का आह्वान, जागो-जागो नौजवान'**, **'नौजवान जब भी जागा, इतिहास ने करवट बदली है'**, **'भगतसिंह का सपना आज भी अधूरा, छात्र और नौजवान उसे करेंगे पूरा'**, **'भगतसिंह को याद करेंगे, जुल्म नहीं बर्दाश्त करेंगे'** आदि नारे लगा रहे थे। इस अवसर पर छात्रों-नौजवानों का आह्वान करते हुए एक पर्चा भी वितरित किया गया।

विचार यात्रा में **सोनीपत** से साइकिल पर आयी छात्रों की टोली भी शामिल हुई। इस साइकिल मार्च का नेतृत्व **अभिनव, प्रदीप, चारुचंद, अरविन्द, प्रवीण, पंकज भारद्वाज, संगीता, अमित, कपिल, पंकज कुमार, परिमल, कश्मीर** आदि ने किया।

सोनीपत में जन्मदिवस की पूर्व संध्या पर 26 सितम्बर को **'दिशा छात्र संगठन'** की टोली ने शहर के विभिन्न बाज़ारों तथा औद्योगिक क्षेत्रों में साइकिल जुलूस निकाला और सभाएं कीं।

विभिन्न सभाओं के माध्यम से वक्ताओं ने कहा कि भगतसिंह और उनके साथियों ने अपने लेखों, पर्चों और बयानों में बार-बार यह बताया था कि कांग्रेस के नेतृत्व में जो लड़ाई लड़ी जा रही है उसका लक्ष्य व्यापक जनता की शक्ति का इस्तेमाल करके देशी पूंजीपतियों के लिए सत्ता हासिल करना है, गोरी बुराई की जगह काली बुराई लाना है। उनकी चेतावनी अक्षरश: सही साबित हुई। सन '47 में देशी हुकूमत ने विकास का जो पूंजीवादी रास्ता चुना उसने जनता को दुख-तकलीफ, तबाही-कंगाली के अथाह सागर में धकेल दिया जिसमें जगह-जगह मुट्ठी भर लोगों की अय्याशी के टापू खड़े किये गये। इस विनाशकारी रास्ते पर 54 वर्षों की यात्रा ने आज देश को चौतरफा लूट-खसोट, घिनौने भ्रष्टाचार, बर्बर भ्रातृघाती, साम्प्रदायिक-जातीय कलह और हताशा के दलदल में धंसा दिया है।

इस साइकिल रैली का नेतृत्व **पंकज कुमार, परिमल, कश्मीर** आदि ने किया।

लखनऊ। **'दिशा छात्र संगठन'** की स्थानीय इकाई ने लखनऊ विश्वविद्यालय के कला संकाय में भगतसिंह के विचारों की एक पोस्टर प्रदर्शनी व पुस्तक प्रदर्शनी लगाकर एक अनूठा व प्रेरक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

शहीदे आज़म भगतसिंह के जन्मदिवस पर आयोजित इस प्रदर्शनी में आम छात्र-छात्राओं की भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए **'छात्र-स्वर'** नाम से एक पट्टिका लगायी गयी थी। लोगों के विचार आमन्त्रित करने के लिए लगाये गये इस पट्टिका में आम छात्रों से तीन सवाल पूछे गये थे – आगामी छात्र संघ चुनाव और छात्र राजनीति की पतनशीलता के बारे में, समूह 'ग' द्वारा रोज़गार के सपने दिखाने के खोखलेपन के प्रति तथा दुनिया के सबसे बड़े आतंकवादी अमेरिका द्वारा इंसाफ का फैसला सुनाने के बारे में।

एकदम नये और इस रोचक आयोजन में आम छात्र-छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। तमाम छात्रों ने अपनी-अपनी बेबाक प्रतिक्रिया पट्टिका पर दर्ज की। कुछ छात्रों के जवाब थे – **'पहले चुनाव की करो तैयारी, फिर बाद में करो ठेकेदारी'**; **'समूह ग: एक को रोजगार, निन्यानबे हैं बेरोजगार'**; **'वाह रे सरकार, हमारी सरकार'**; **'अमेरिका की आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई से लाभ क्या! खून की नदियां, ईर्ष्या, वैमनस्य और अंत एक सन्नाटा'**। इस खुले आयोजन में शिक्षकों से भी सहयोग मिला। हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष **इन्द्रप्रभा पराशर** ने **'दिशा'** के कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि आज के विपरीत समय में भगतसिंह को याद करना बेहद ज़रूरी है।

इस आयोजन में **'दिशा'** के कार्यकर्ताओं ने एक विशेष ऐप्रन भी पहन रखा था, जिन पर **'खत्म करो पूंजी का राज, लड़ो बनाओ लोक स्वराज!'**, **'भगतसिंह की बात सुनो, नई क्रान्ति की राह चुनो'** आदि नारे लिखे थे। इस आयोजन का नेतृत्व **राकेश कुमार, देवेन्द्र प्रताप, आशीष, सुमित, अरविन्द** आदि ने किया।

गोरखपुर। **'दिशा छात्र संगठन** का नारा, **सर्दियां तुम्हारी वसंत हमारा**, नारे की अनुगूंज के साथ गोरखपुर में भगतसिंह का जन्मदिवस

चार दिवसीय जनजागरण अभियान के रूप में मनाया गया।

24 से 27 सितम्बर तक चले इस अभियान के तहत **'दिशा'** की टोली ने विभिन्न नारों से युक्त ऐप्रन पहने और तख्तियां लगाए हुए साइकिल रैलियां निकाली और शहर के विभिन्न कार्यालयों में नुक्कड़ नाटक **'हवाई गोले'** की प्रस्तुति की। नाटक के माध्यम से संसदीय सुअरबाड़े की असलियत का खुलासा किया गया।

27 सितम्बर को सुबह प्रेमचन्द पार्क से एक साइकिल रैली निकाली गयी जो भगतसिंह चौक पर पहुंचकर शहीदे आज़म की मूर्ति पर माल्यार्पण के बाद एक नुक्कड़ सभा में तब्दील हो गयी। सभा में वक्ताओं ने कहा कि जब सारे देश में आम आदमी के हालात लगातार बद से बदतर होते जा रहे हों, 30 करोड़ बेरोजगार सड़कों की खाक छान रहे हों, नौकरी मिलना तो दूर मिली हुई नौकरियां ही छीनी जा रही हों, शिक्षा से लेकर चिकित्सा तक सब कुछ बिकाऊ माल बनाया जा रहा हो तो ऐसे समय में बेहतर शिक्षा और बेहतर भविष्य के लिए छात्रों की लड़ाई कैम्पसों के भीतर सिमटी नहीं रह सकती। छात्र-नौजवान आबादी को समाज के व्यापक और बुनियादी सवालों से जूझना होगा। शाम को **'दिशा'** के कार्यकर्ताओं ने मशाल जुलूस भी निकाला। जो भगतसिंह चौक से गोलघर होते हुए टाउनहाल पर जाकर समाप्त हुआ। इसके बाद क्रान्तिकारी गीतों की प्रस्तुति भी की गयी। इस कार्यक्रम में **अरुण मौर्य, अरुण यादव, जनार्दन, शालिनी, समृद्धि, समीक्षा, विक्रम जायसवाल, आदेश** आदि ने भागीदारी की।

सूरजपुर (मऊ) 'नौजवान भारत सभा' की स्थानीय इकाई ने भगतसिंह के जन्मदिवस के अवसर पर 29 सितम्बर को सूरजपुर में शहीद पुस्तकालय के सामने एक सभा का आयोजन किया।

सभा के दौरान वक्ताओं ने कहा कि पिछले चौवन वर्षों के आज़ाद भारत में जहां देशी पूंजीपतियों की पूंजी में पांच सौ गुने से हजार गुने तक की बढ़ोत्तरी हुई है वहीं मेहनतकश बहुसंख्यक आम आबादी की बदहाली लगातार बढ़ती गयी है। विगत एक दशक के दौरान, जबसे उदारीकृत नयी अर्थव्यवस्था लागू हुई है, यह लूटतंत्र और ज्यादा बढ़ता गया है। हालात ये है कि विगत एक दशक के दौरान लगभग चार लाख छोटे-बड़े कारखाने बन्द हो चुके हैं और लगभग पांच करोड़ लोग सड़कों पर ढकेले जा चुके हैं।

शिक्षा-चिकित्सा जैसी मिली बुनियादी सहूलियतें भी अब छीनी जा रही हैं। गरीबी और तंगहाली से पूरे परिवार सहित आत्महत्याएं बढ़ती जा रही हैं। एक तरफ अनाज का विपुल भण्डार पड़ा है और सड़ रहा है दूसरी तरफ देश के कई हिस्सों में लोग भूख से मर रहे हैं, कुपोषण के शिकार हो रहे हैं। भगतसिंह ने ऐसे ही समाज के बारे में कहा था **'अगर कोई सरकार जनता को उसके बुनियादी सुविधाओं से वंचित रखती है तो उस देश के छात्रों-नौजवानों का यह दायित्व ही नहीं, आवश्यक कर्तव्य बन जाता है कि वे उस सरकार को पलट दें या फिर तबाह कर दें।'** वक्ताओं ने नौजवानों को आह्वान किया कि वे भगतसिंह के सपनों का समाज बनाने के लिए आगे आयें। यही आज वक्त की जरूरत है और यही शहीदे आज़म को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सभा को, **आदेश कुमार, कपिलदेव, के. एन.सिंह, नन्दलाल, भरत शर्मा, पारसनाथ सिंह, डा. अमरनाथ, अनुभवदास शास्त्री** आदि ने सम्बोधित किया। संचालन **दसवंत** ने किया।

सभा के प्रारम्भ में भगतसिंह के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। अन्त में **देहाती मज़दूर किसान यूनियन** व **नारी** सभा की संयुक्त टोली ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर पुस्तक एवं पोस्टर प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी।

साहसिक विद्रोह है!

(पृष्ठ 26 का शेष)

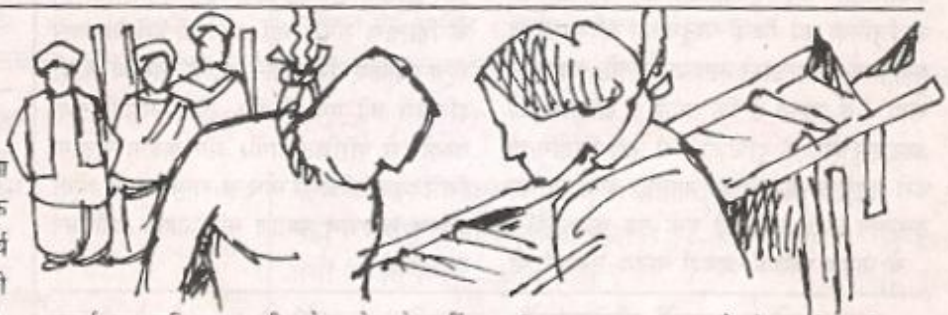

लिए युवाओं का संघर्ष वस्तुत: जाति-व्यवस्था और धार्मिक कट्टरपंथ के विरुद्ध भी एक संघर्ष है और यह एक अनिवार्य-अपरिहार्य संघर्ष है। प्रेम करने की आज़ादी जीने की आज़ादी है। यह जनवाद की वह पुरानी, बुनियादी लड़ाई है, जो अभी तक हमारे देश में जीती नहीं जा सकी है। भारतीय समाजवादी क्रान्ति के एजेण्डे पर जातिवाद-विरोध, धर्म के मामले में व्यक्तिगत आज़ादी और प्रेम के मामले में जाति-धर्म के बंधनों के विरोध का सवाल अहम स्थान रखता है। यह एक शौर्यपूर्ण और जुझारू सांस्कृतिक आन्दोलन का एजेण्डा है। इस एजेण्डे को हाथ में लिये बिना जनमुक्ति का प्रबल वेगवाही झंझावत नहीं खड़ा किया जा सकता। जाति-धर्म के बंधन के सम्पूर्ण, नाश की लड़ाई एक लम्बी लड़ाई है, जो राजनीतिक क्रान्ति सम्पन्न होने के बाद भी दीर्घकाल तक सतत् जारी रहेगी। लेकिन इस लड़ाई का यदि आज ही जोर-शोर से नहीं छेड़ा जायेगा तो सामाजिक-राजनीतिक क्रान्ति की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया ही नहीं जा सकेगा।

*

दमन की हर चेष्टा प्रतिरोध की लपटों को हवा देकर लहकाने-दहकाने का ही काम करती है। सैकड़ों विशालों और सोनुओं को फांसी चढ़ाकर भी युवाओं के दिलों से प्रेम करने की पवित्र मानवीय चाहत का खात्मा नहीं किया जा सकता, ठीक वैसे ही जैसे, अन्याय के विरुद्ध विद्रोह के जज्बे को नहीं दबाया जा सकता।

भारतीय समाज के अंधेरे में प्रेम करना यदि गुनाह माना जाता है तो इसके मानी यह है कि प्रेम एक साहसिक विद्रोह है। फांसी और गोली से प्रेम करना बंद नहीं किया जा सकता। बहादुर युवा फिर भी प्रेम करेंगे। जाति और धर्म के बंधनों को लात मारकर प्रेम करेंगे। यदि वे इंसाफपसन्द और स्वाभिमानी हैं, यदि वे सच्चे अर्थों में युवा हैं तो प्रेम करने के अधिकार के लिए वे जाति-धरम के ठेकेदार "पंच परमेश्वरों" की सामुदायिक बर्बरता को अवश्य ही चुनौती देंगे। प्रेम करने के लिए की गई हर बगावत जाति प्रथा और धार्मिक कट्टरता पर चोट करेगी और सामाजिक मुक्ति के लिए जनमानस को तैयार करने का काम करेगी।